ASTRO ARPITA NATH

कुंडली मिलान में भकूट दोष और यह कब रद्द होता है

Arpita Nath द्वारा · योग, दोष एवं मिलान · 2026-09-23

वैदिक ज्योतिष (Jyotish) में, विवाह अनुकूलता (Kundli Milan) के लिए उपयोग की जाने वाली पारंपरिक 36-गुण अष्टकूट प्रणाली में भकूट कूट दूसरा सबसे महत्वपूर्ण परीक्षण है। पूरे 7 गुणों के साथ - जो केवल नाड़ी (8 गुण) के बाद आता है - भकूट दंपत्ति के आपसी मनोवैज्ञानिक तालमेल, भावनात्मक जुड़ाव, वित्तीय स्थिति और जीवन की दीर्घायु का आकलन करता है।

भकूट की गणना दोनों भागीदारों की चंद्र राशियों (Janma Rashis) के बीच की सापेक्ष दूरी को देखकर की जाती है। जब ये राशियां विशिष्ट संघर्षपूर्ण ज्यामितीय स्थितियों में पड़ती हैं, तो अंक 7 में से 0 हो जाते हैं, जिससे पारंपरिक दोष उत्पन्न होता है जिसे भकूट दोष (Bhakoot Dosha) के रूप में जाना जाता है।

1. भकूट दोष के तीन प्रकार

भकूट दोष तब बनता है जब दोनों चंद्र राशियां एक-दूसरे से तीन प्रतिकूल भाव संबंधों में से किसी एक में स्थित होती हैं:

षडाष्टक (6/8 संबंध — सबसे प्रतिकूल संयोजन):
• **ज्यामिति**: एक साथी की चंद्र राशि दूसरे की राशि से छठे भाव में होती है, जबकि दूसरे की राशि पहले से आठवें भाव में होती है।
• **महत्व**: छठा भाव विवाद, स्वास्थ्य संबंधी कमजोरियों और मुकदमेबाजी का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि आठवां भाव अचानक आने वाले संकट और आयु का प्रतिनिधित्व करता है।
• **प्रभाव**: यह लगातार गलतफहमियों, भावनात्मक टकराव, स्वास्थ्य संबंधी जटिलताओं और गंभीर अनसुलझे मामलों में कानूनी विवाद या वैवाहिक स्थिरता के लिए खतरे को जन्म देता है।

द्विर्द्वादश (2/12 संबंध):
• **ज्यामिति**: एक साथी की चंद्र राशि दूसरे की राशि से दूसरे भाव में होती है, जबकि दूसरे की राशि पहले से बारहवें भाव में होती है।
• **महत्व**: दूसरा भाव पारिवारिक संपत्ति और वाणी को नियंत्रित करता है, जबकि बारहवां भाव व्यय, ऋण और शारीरिक दूरी का प्रतिनिधित्व करता है।
• **प्रभाव**: वित्तीय तनाव, अत्यधिक संयुक्त खर्च, संपत्ति संचय में कठिनाइयां या करियर अथवा जीवन की जिम्मेदारियों के कारण लंबे समय तक शारीरिक अलगाव की स्थिति।

नवपंचम (9/5 संबंध):
• **ज्यामिति**: एक साथी की चंद्र राशि दूसरे की राशि से पांचवें भाव में होती है, जबकि दूसरे की राशि पहले से नौवें भाव में होती है।
• **महत्व**: यद्यपि 5 और 9 प्राकृतिक रूप से धार्मिक त्रिकोण भाव हैं, लेकिन शास्त्रीय मिलान में चंद्रमा से चंद्रमा की गणना करते समय, कुछ निश्चित जोड़े परिवार विस्तार, संतान या वैचारिक सिद्धांतों को लेकर मतभेद पैदा करते हैं।
• **प्रभाव**: संतान प्राप्ति में देरी या तनाव, वैचारिक हठधर्मिता या ससुराल पक्ष और गुरुजनों के साथ मतभेद।

2. षडाष्टक के अंतर्गत अपवाद: मित्रवत बनाम अमित्रवत जोड़ियां

सभी 6/8 स्थितियां समान रूप से विनाशकारी नहीं होती हैं। शास्त्रीय ग्रंथ षडाष्टक को दो अलग-अलग श्रेणियों में विभाजित करते हैं:

मृत्यु षडाष्टक (अशुभ / घातक 6/8):
• चंद्र राशियों के स्वामी ग्रह स्वाभाविक रूप से शत्रु होते हैं।
• **जोड़ियों में शामिल हैं**: मेष और वृश्चिक (समान स्वामी मंगल, लेकिन राशियों के तत्वों में टकराव), वृषभ और तुला (समान स्वामी शुक्र, लेकिन पृथ्वी बनाम वायु तत्व), मिथुन और वृश्चिक, कर्क और धनु, सिंह और मकर, कन्या और कुंभ, तुला और मीन।
• यह वास्तविक वैवाहिक तनाव तथा स्वास्थ्य या भावनात्मक खिंचाव लाता है।

प्रीति षडाष्टक (शुभ / स्नेहपूर्ण 6/8):

• यह तब बनता है जब चंद्र राशि के स्वामी स्वाभाविक रूप से परस्पर मित्र हों या उनका स्वामी ग्रह एक ही हो।
• **जोड़ियों में शामिल हैं**: मेष और कन्या (तटस्थ), वृषभ और धनु, मिथुन और मकर, कर्क और कुंभ, सिंह और मीन।
• ग्रहों की पारस्परिक सद्भावना तकनीकी 6/8 की दूरी को सौम्य बना देती है, जिससे दंपति सहानुभूति के साथ विवादों को सुलझाने में सक्षम होते हैं।

3. भकूट दोष का शास्त्रीय परिहार (भकूट दोष भंग)

मुहूर्त चिंतामणि और बृहत् पराशर होरा शास्त्र सहित शास्त्रीय प्रमाण बताते हैं कि कुंडली के अनुकूल संयोजनों द्वारा भकूट दोष अक्सर निष्प्रभावी हो जाता है:

एक ही चंद्र राशि स्वामी (एक आधिपत्य):
• यदि दोनों चंद्र राशियों का स्वामी एक ही ग्रह हो, तो यह दोष समाप्त हो जाता है।
• **उदाहरण**: मेष और वृश्चिक (दोनों के स्वामी मंगल), वृषभ और तुला (दोनों के स्वामी शुक्र), मिथुन और कन्या (दोनों के स्वामी बुध), धनु और मीन (दोनों के स्वामी गुरु), मकर और कुंभ (दोनों के स्वामी शनि)।

चंद्र राशि स्वामियों की ग्रह मैत्री (राशि मैत्री):
• यदि दोनों चंद्र राशियों के स्वामी आपस में नैसर्गिक मित्र हों (जैसे देव समूह में सूर्य, चंद्र, मंगल और गुरु, या विरोधी समूह में बुध, शुक्र और शनि), तो भावनात्मक और सामाजिक सामंजस्य के कारण 0-अंक का प्रभाव कम हो जाता है।

एक ही नक्षत्र, भिन्न राशियां (एक नक्षत्र):
• जब दोनों साथी एक ही जन्म नक्षत्र साझा करते हैं जो दो अलग-अलग राशियों में फैला हो (जैसे मेष और वृषभ के बीच कृत्तिका, या कन्या और तुला के बीच चित्रा), तो साझा नक्षत्र ऊर्जा राशि-स्तर के मतभेदों को समाप्त कर देती है।

पूर्ण नाड़ी कूट (8/8 अंक):
• यदि युगल में नाड़ी कूट की पूर्ण अनुकूलता हो (कोई नाड़ी दोष न हो), तो प्राप्त 8 अंक अक्सर भकूट के 7 अंकों की कमी को संतुलित कर देते हैं, बशर्ते कि कुल प्राप्तांक 18 अंकों से सहजता से अधिक बना रहे।

अनुकूल नवांश (D9) स्थिति:
• यदि दोनों साथियों के D9 लग्न और D9 चंद्र राशियां परस्पर सहयोगी हों या किसी शुभ (अपीड़ित) गुरु द्वारा दृष्ट हों, तो D1 में दिखने वाला अवचेतन तनाव वैवाहिक जीवन के गहरे स्तरों पर सुलझ जाता है।

4. भकूट दोष पर व्यावहारिक दृष्टिकोण

• केवल अकेले भकूट दोष के कारण तलाक नहीं होता है; यह मुख्य रूप से उन क्षेत्रों को उजागर करता है जहाँ दंपत्ति को सोच-समझकर सामंजस्य बिठाने की आवश्यकता होती है (2/12 के लिए वित्त, 6/8 के लिए भावनात्मक अहंकार, और 9/5 के लिए पालन-पोषण/जीवन दर्शन)।

• अनुकूलता का मूल्यांकन करते समय, कोई निर्णय देने से पहले यह जाँच लें कि क्या कोई शास्त्रीय परिहार (रद्द होना) लागू होता है। यदि परिहार मौजूद है और कुल अंक 20 से 24 से अधिक हैं, तो भकूट दोष को आमतौर पर प्रबंधनीय माना जाता है।

ज्योतिष केवल मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए, कृपया किसी योग्य पेशेवर से परामर्श लें।